International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 4; July 2018; Page No. 51-52

'अंतिम सत्याग्रही' में सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति

गीतु. वी. कृष्णन

शोध छात्रा, हिन्दी विभाग, कोच्चिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कोच्चिन, केरल, भारत।

प्रस्तावना

साहित्य हमेशा समाज से जुडा रहता है। वह प्रत्येक युग की संवेदनाओं और समस्याओं को दर्शाता है। याने हर युग के साहित्य की अपनी विशेषताएँ होती हैं। आधुनिक काल से ही साहित्यकारों ने सामाजिक जीवन और जनता की समस्याओं के चित्रण के प्रति ध्यान दिया है। इसके पहले साहित्य में यशोगान, भक्ति और श्रृंगारिकता की प्रवृत्ति प्रमुख रही थी। आगे उत्तराधुनिकता के दौर में साहित्य जनता के और भी निकट आ गया।

"समाज के विभिन्न समूह जो अभी तक हाशिए पर रहे हैं, जिनकी अस्मिता और आवाज को निरंतर दबाया गया है या जिन्हें आभिजात्यवादी - वर्चस्ववाद शक्तियों ने हाशिरा पर थकेल दिया है- वे दमित और दलित समुदाय उत्तर-आधुनिक चिंतन में महत्वपूर्ण हो गये।"[1] याने दमित, शोषित और हाशिए पर स्थित लोग उत्तराधुनिक साहित्य के केंद्र बन गये और उनकी समस्याओं का चित्रण साहित्य में होने लगा।

हिन्दी साहित्य की सभी विधाओं में विशेषत: जीवनीपरक उपन्यासों में उत्तराधुनिक समाज के जटिल जीवन को रेखांकित करने का प्रयास हुआ है। किसी व्यक्ति विशेष के वास्तविक जीवन पर आधारित इन उपन्यासों में वर्तमानकालीन समस्याओं की व्याख्या के साथ उनका समाधान भी प्रस्तुत किया गया है। राजेन्द्र मोहन भटनागर के 'अंतिम सत्याग्रही' को इस परंपरा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा सकता है।

यद्यपि उपन्यास का आधार नमक आन्दोलन या सत्याग्रह है तो भी उपन्यासकार का उद्देश्य इतिहास की घटनाओं का बारीक अंकन नहीं बल्कि देश की गन्दी राजनीति तथा उसके कारण पनपी सामाजिक कुरूपताओं का अंकन है।

उपन्यास का नायक नगारा एक पेशेवर हत्यारा था जो गाँधीजी के विचारों से प्रभावित होकर गाँधीवादी बन जाता है। आज़ादी के बाद भी नगारा नहीं बदला पर कईयों ने अपने चेहरे एवं चरित्र बदल दिए और यहाँ की राजनीति भी बदली। आज वह कच्ची बस्ती में रहकर अन्याय, अत्याचार के विरुद्ध जागरण करता है और सत्याग्रह ही उसका अचूक हथियार है।

भारत की सामाजिक संरचना की अपनी खूबियाँ और खामियाँ हैं। संयुक्त परिवार भारतीय सामाजिक व्यवस्था का मूलाधार था, जिसमें लोग बुजुर्गों को ईश्वर के समान मानकर उनकी सेवा करते थे। लेकिन उत्तराधुनिक समय में हुए औद्योगीकरण, नगरीकरण, भूमंडलीकरण आदि के प्रभाव से संयुक्त परिवार व्यवस्था तहस-नहस हो गयी और जीवन मूल्यों का व्यापक पैमाने पर ह्रास हुआ। इसका नतीजा परिवार के वृद्ध सदस्यों को भुगतना पडा। वे युवा पीढी के लिए बोझ बन गये। समाज भी वृद्धों के प्रति उपेक्षा भाव अपनाने लगा। फलस्वरूप अकेलापन उनकी नियति बन गया। उपन्यास का नायक नगारा भी अकेलापन का शिकार है और वह सोचता है "बुढ़ापे में एकांत काटने को आता है। कोई पास नहीं बैठना चाहता। सुनता कि वह पुरानी पीढ़ी का है, नई पीढ़ी के लिए एकदम बेकार।"[2] इस प्रकार वरिष्ठ नागरिकों के प्रति होनेवाली उपेक्षा और उदासीनता उत्तराधुनिक समाज की पहचान बन गयी है।

आगे नारी ही वह दूसरा वर्ग है जो कई प्रकार के शोषण की शिकार है। पुरुष समाज के लिए स्त्री विलास का साधन मात्र है। समाज में स्त्री को देह के स्तर पर ही समझा जाता है। पुरुषसत्तात्मक समाज में स्त्री अपने अधिकारों से वंचित है। बाज़ारवाद के इस जमाने में औरत पूर्णत: एक बिकाऊ माल के रूप में तब्दील हो गई है। लेकिन अब वह अपने ऊपर होनेवाले शोषण पहचानने लगी और अपने अधिकारों के लिए संघर्ष भी करने लगी। उपन्यास में कुछ लोग धतुरी के साथ जबरदस्ती करने का प्रयास करते हैं, लेकिन नगारा उसे बचाता है। बाद में पता चलता है की धतुरी को पैसों के लिए माँ-बाप ने ही बेचा था। पुरुषवर्चस्ववादी समाज में अपनी हैसियत को पहचानकर धतुरी बोलती है श मेरा क्या है, औरत हूँ। मरद के पाँव की जूती।... जो चाहे, जब चाहे और जैसे चाहे सलूक करे, मैं इनकार करनेवाली कौन होती हूँ।"[3] इस तरह अपने ऊपर होनेवाले शोषण से अवगत धतुरी माँ-बाप की उपेक्षा करके तथा नगारे को अपना पति स्वीकार कर शोषक समाज के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करती है।

जनतांत्रिक देश होने के कारण भारतीय समाज में राजनीति का महत्वपूर्ण स्थान है और उसका संबंध देश के प्रत्येक प्रजा से है। लेकिन उत्तराधुनिक राजनीति राजनीतिक-नेताओं के हाथ का खिलौना मात्र रह गयी है। नेता लोग कुर्सी प्राप्त करने, प्राप्त कुर्सी को बनए रखने और धनोपार्जन करने के लिए राजनीति को माध्यम बना रहे हैं। उपन्यास में भी इसका उदाहरण है- "अचानक सत्ता में नई पार्टी आई। राजनीतिक गतिविधियाँ शुरू हुईं। पार्टी अपनी जड़ जमाना चाहती थी और लोकमत को अपनी मुट्ठी में करना चाहती थी। उसने लोकमत संग्रह के लिए नए-नए नाटक शुरू किए। अपने लोगों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रीति से लाभ पहुंचाना शुरू किया और स्वतंत्रता सेनानियों का चयन किया। कच्ची बस्ती में से नगारा का चयन हुआ और वह स्वतंत्रता सेनानी हो गया।"[4] इस प्रकार सत्ता में आयी नई पार्टी जो है अपनी जड़ जमाने के लिए तथा लोकमत प्राप्त करने के लिए स्वतंत्रता सेनानियों को पेंशन और स्मृति-चिह्न देना शुरू करती है। इससे स्पष्ट है कि वर्तमान नेता लोग जो हैं सत्ता को बनाए रखने के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार हैं।

उत्तराधुनिक भारत में ऐसे बहुसंख्यक लोग हैं जो 'गरीबी रेखा' के नीचे जीवन बिता रहे हैं। इसमें मजदूर वर्ग भी शामिल हैं और वे झुग्गी–झोपडियोंवाली बस्ती में जीवन बिताने के लिए मजबूर हैं। गरीबी, भूख, बीमारी और गन्दगी अपनी बीभत्स रूप में इन बस्तियों में फैली है और

"यहाँ का हर एक आदमी कौडियों के मोल बिकाऊ है।.... यह बस्ती नहीं, मलबे का ढेर है।.... चारों ओर सडान्ध...। गन्दगी भी ऐसी कि खुद गन्दगी को यहाँ से गुजरते हुए नाक पर कपडा रखना पड़े।"[5] आर्थिक अभावों से ग्रस्त यहाँ के लोग पैंसों के लिए कुछ भी करने को तैयार होते हैं। उपन्यास के कच्ची बस्तीवाले रुपयों के लिए जुलूस में नारे लगाने जाते हैं- "उनको नारे लगाने की अच्छी मजदूरी मिलेगी-रोग से ड्योढी।.... चोट–फोट खा गए तो घर बैठे उतने दिन की दिहाड़ी मिलेगी, जितने दिन खाट भोगनी पड़ेगी।"[6]

आज़ादी के बाद हमारे भारत में धर्म निरपेक्ष, शोषण मुक्त, कल्याणकारी शासन की कल्पना की गई थी। इस व्यवस्था में अमीर गरीब सब बराबर था, सबका अधिकार था। लेकिन यह सब सपना ही रह गया। वर्तमानकालीन शासन व्यवस्था में उद्योगपतियों की महत्ता है और इन उद्योगपतियों के साथ मिलकर अधिकारी वर्ग मज़दूरों एवं आम जनता का शोषण कर रहा हैं। विकास के नाम पर होनेवाला शोषण सामान्य बात हो गया है। भूमंडलीकरण के बहाने विदेशी कंपनियों ने छोटे-छोटे इलाकों तक अपना व्यापार शरू किया है जिसके कारण स्थानीय लोगों को विस्थापन का दर्द भोगना पड रहा है। उपन्यास का नायक नगारा जिस गंदी बस्ती में रहता था, सरकार उस जगह को नीलाम करा देती है और बिल्डिंग मास्टर उस बस्ती को खरीदकर वहाँ के लोगों को मजबूरन निकालने का प्रयास करता है।

इससे स्पष्ट है कि आज हमारे देश को साम्राज्यवादी ताकतें नियंत्रित कर रही हैं। अपने देश के हितों का बलिदान करके राजनीति भी उनका साथ दे रही है। राजनीति और साम्राज्यवादी शक्तियाँ मिलकर जनता का शोषण कर रही हैं। इस शोषण के खिलाफ किसी ने आवाज़ उठायी तो उसे चुप कराने के लिए या तो सामज्यवादी सीधे आक्रमण करता है या राजनीतिज्ञों के सहारे चुप कराया जाता है। उपन्यास का नायक नगारा के साथ भी ऐसा ही होता है। जबरदस्ती से होनेवाले विस्थापन के खिलाफ सत्याग्रह करने पर उसे राजनीतिज्ञ और साम्राज्यवादी मिलकर हमेशा-हमेशा के लिए खामोश कर देते हैं।

इस प्रकार उपन्यासकार ने उत्तराधुनिक समाज में व्याप्त विसंगतियों के हर पहलू को पहचानकर उस पर तीखा प्रहार किया है और उसके लिए उन्होंने गाँधीजी द्वारा प्रयुक्त हथियार अहिंसा तथा सत्याग्रह को ही चुना, जिसके ज़रिए गाँधीजी ने पूँजीवादी व्यवस्था की जडें हिला दी थीं। भूमंडलीकरण के इस दौर में भी गाँधीजी के आदर्शों को युगानुरूप स्वीकार करके हम साम्राज्यवाद के चंगुल से बच सकते हैं। याने गाँधीवादी विचारों से ही समाज का सुधार संभव है। इस वास्तविकता को स्वीकार करनेवाले लेखक ने भी अपने उपन्यास को नई पीढ़ी के प्रतिनिधि वंदना को नगारा के रास्ते पर चलते दिखाकर समाप्त किया है।

सन्दर्भ

1. कृष्णदत्त पालीवाल-उत्तर आधुनिकता और दलित साहित्य, पृ. 29
2. डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर-अंतिम सत्याग्रही, पृ. 27
3. वही, पृ. 22
4. वही, पृ. 28
5. वही, पृ. 87
6. वही, पृ. 52